अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

तेरापंथेश्वर महाश्रमण के ज्योतिचरण से पावन बनी केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम

-लगभग चैदह किलोमीटर का विहार कर महातपस्वी पहुंचे अनंतशयनम कल्याण मण्डपम

-विश्व प्रसिद्ध पद्मनाभ स्वामी मंदिर के अति सन्निकट से आचार्यश्री ने प्रवाहित की ज्ञानगंगा

-चैर्य के परित्याग से आत्मा का हो सकता है कल्याण

-राज्यपाल के प्रिंसिपल सेक्रेट्री श्री देवेन्द्र धोदावत ने किए आचार्यश्री के दर्शन

17.03.2019 तिरुवनंतपुरम (केरल): भारत के भौगोलिक मानचित्र के अनुसार भारत के दक्षिण-पश्चिम भाग में अवस्थित 'ईश्वर का अपना घर' कहे जाने वाले केरल राज्य राजधानी तिरुवनंतपुरम (त्रिवेन्द्रम)। जिसे देवताओं की नगरी कहा जाता है। जहां स्थापित है विश्व प्रसिद्ध विष्णु मंदिर श्रीपद्मनाभ स्वामी मंदिर। इस नगर का नाम भगवान विष्णु के नाम 'अनंत' के आधार पर ही रखा गया है। यहां तेरापंथ के नवमाधिशास्ता गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी का आज से लगभग पचास वर्ष पूर्व पदार्पण हुआ था। ऐसी सुप्रसिद्धियों को प्राप्त नगर में रविवार को अपनी अहिंसा यात्रा के साथ जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी पधारे तो इस नगर के एक और प्रसिद्धि मानों स्वतः ही जुड़ गई और तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में भी एक नवीन अध्याय का सृजन हो गया। तेरापंथ के नवमाधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी के बाद ग्यारहवें अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी का दक्षिण भारत के दौरान केरल की राजधानी में पधारे। यह महज संयोग ही था कि 17 मार्च को ही आचार्यश्री तुलसी का आगमन हुआ था और आचार्यश्री महाश्रमणजी के पदार्पण की तारीख भी 17 मार्च ही रही। आचार्यश्री के आगमन से जन-जन का मन उत्साहित था।

रविवार को प्रातः आचार्यश्री ने ब्लू स्टार रेसिडेंसी से तिरुवनंतपुरम की ओर मंगल प्रस्थान किया। अपनी अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए आचार्यश्री जैसे-जैसे केरल की राजधानी के निकट हो रहे थे, श्रद्धालुओं का उत्साह बढ़ता जा रहा था। धरती के महासूर्य आसमान के सूर्य के तपन को अपनी समता से मानों नगण्य बनाते हुए गंतव्य की ओर गतिमान थे। आचार्यश्री तिरुवनंतपुरम के प्रख्यात विष्णु मंदिर श्रीपद्मनाभ स्वामी मंदिर के सन्निकट स्थित अनंतशयनम कल्याण मण्डपम में पधारे।

मण्डपम परिसर में आयोजित मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम के दौरान आचार्यश्री ने अपने पावन प्रवचन में कहा कि जैन वाङ्मय में 18 पापों का वर्णन किया गया है। इनमें तीसरा पाप है-अदत्तादान अर्थात् चोरी करना। किसी की वस्तु को गलत भावना से ले लेना चोरी होती है। अपनी आत्मा के कल्याण की इच्छा रखने वाले चैर्य से बचने का प्रयास करना चाहिए। अचैर्य एक पाप है जो आत्मा के कल्याण में बाधक बनती है। चोरी एक अपवित्र कार्य है। चोरी से कमाया गया पैसा अशुद्ध होता है। चोरी से कमाए गए करोड़ों रुपए से ज्यादा महत्त्वपूर्ण ईमानदारी व परिश्रम से कमाए गए लाख रुपए होते हैं। आदमी को चोरी से नहीं, परिश्रम से कमाने का प्रयास करना चाहिए। जो आदमी चोरी नहीं करता, सफलता उसको चाहती है। उसके पास समृद्धि का जाना चाहती है। उसकी यश-कीर्ति फैलती है। उसे सुगति की प्राप्ति हो सकती है और विपत्ति तो उसकी ओर देखना भी नहीं चाहती।

गृहस्थों को अपने बच्चों में ईमानदारी और सच्चाई के संस्कारों को पुष्ट बनाने का प्रयास करना चाहिए। बच्चों को चोरी, बेईमानी से बचाने का प्रयास करना चाहिए। बच्चों की चोरी आदि की अनुमोदना न करें न ही प्रोत्साहित करें, बल्कि बच्चों को सच्चाई और ईमानदारी के लिए प्रोत्साहित करें। गृहस्थ को भी चोरी से बचते हुए साफ-सुथरा जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए। मंगल प्रवचन के पश्चात् जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री अरविन्द संचेती और कार्यकारिणी सदस्य श्री विजयराज आंचलिया ने आचार्यश्री के समक्ष साध्वी 'सुन्दरजी-जीवनवृत्त' नामक पुस्तक लोकार्पित की। आचार्यश्री ने पुस्तक के संदर्भ में मंगल आशीर्वाद

प्रदान किया। केरल राज्यपाल के प्रिंसिपल सेक्रेट्री श्री देवेन्द्र धोदावत ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी तो आचार्यश्री ने उन्हें पावन पाथेय और मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।